Page No.: 1
Date:

यूनिट - 2

Q. संस्कृति क्या है। जानने में संस्कृति की क्या भूमिका है सविस्तार से बताए ?

Ans संस्कृति :→ किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी अन्तःस्थ प्रकृति की अभिव्यक्ति है यह हमारे साहित्य में धार्मिक कार्यों में मनोरंजन और आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में भी देखी जा सकती है संस्कृति एक समाज से दूसरे समाज तथा एक देश से दूसरे देश में बदलती रहती है। इसका विकास एक सामाजिक अथवा राष्ट्रीय संदर्भ में होने वाली ऐतिहासिक एवं ज्ञान सम्बन्धी प्रक्रिया व प्रगति पर आधारित है।

संस्कृति का अर्थ :→ यह 'कृ' (करना) धातु से बना है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के कल्ट से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना।

संस्कृति का शब्दार्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य प्रगतिशील प्राणी है यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। 'संस्कृति' शब्द को तीन अर्थों में स्पष्ट किया जा सकता है। (1) साहित्यिक अर्थ (2) नैतिक अर्थ (3) समाजशास्त्रीय अर्थ।
साहित्यिक अर्थ में 'संस्कृति' जीवन का प्रकाश और कोमलता है। देश या समाज के कलात्मक एवं बौद्धिक विकास को ही संस्कृति माना है।
* नैतिक अर्थ में 'संस्कृति' शब्द का अर्थ है नैतिक, आध्यात्मिक अथवा बौद्धिक विकास

Scanned with CamScanner

(2)

Page No.:
Date:

* समाजशास्त्रीय रूप में संस्कृति का अर्थ है मानव द्वारा निर्मित

परिभाषाएं :—

* ओरेव का विचार — "समाज की संस्कृति का अर्थ है समाज की सम्पूर्ण जीवन विधि।"

* रैल्फ लिन्टन का विचार → संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों का परिणाम है जिसके निर्माणकारी तत्व किसी विशिष्ट समाज के सदस्यों द्वारा प्रयुक्त तथा संचारित होते हैं।"

* जोसेफ पीपर के विचार → "संस्कृति की समस्त प्राकृतिक वस्तुओं और उन उपहारों तथा गुणों का सार है जो मनुष्य से संबंध रखते हुए भी उनकी आवश्यकताओं के तात्कालिक क्षेत्र से परे है।"

संस्कृति और शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध —
संस्कृति और शिक्षा का घनिष्ठ संबंध है संस्कृति के बिना शिक्षा का तथा शिक्षा के बिना संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। शिक्षा के दो प्रमुख कार्य है — पहला संस्कृति की रक्षा करना और दूसरा संस्कृति की उसकी प्रगति करना। शिक्षा संस्कृति की प्रत्यक्ष उपज है यह शिक्षा को केवल उसके उपकरण तथा अन्य सामग्री ही प्रदान नहीं करती बल्कि उसके अस्तित्व का तार्किक आधार भी प्रदान करती है शिक्षा ही संस्कृति का संदेश एक देश से दूसरे देश को देती है। शिक्षा और संस्कृति समाज में संस्कार और नैतिकता की भावना को बढ़ावा मिलता है इसी तरह संस्कृत में शिक्षा के लिए बहुत कुछ निहित है।

Scanned with CamScanner

(3)

Page No.:
Date:

संस्कृति की विशेषताएं :→

1. संस्कृति सीखी जाती है और प्राप्त भी जाती है, अर्थात मानव के द्वारा संस्कृति को प्राप्त किया जाता है कुछ निश्चित व्यवहार है जो जन्म से या आनुवांशिकता से प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के कुछ गुण अपने माता-पिता से प्राप्त होते हैं।

2. संस्कृति लोगों के समूह द्वारा बाँटी जाती है- एक सोच या विचार या कार्य को संस्कृति कहा जाता है।

3. संस्कृति संचयी होती है- संस्कृति में शामिल विभिन्न ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित किया जा सकता है।

4. संस्कृति परिवर्तनशील होती है- ज्ञान, विचार और परम्परायें नयी संस्कृति के साथ जुड़ते जाते हैं। समय के बीतने के साथ ही किसी विशेष संस्कृति में सांस्कृतिक परिवर्तन संभव होते जाते हैं।

5. संस्कृति गतिशील होती है। कोई भी संस्कृति स्थिर दिशा में या स्थायी नहीं होती है। जैसे समय बीतता है। संस्कृति निरंतर बदलती है और उसमें नये विचार तथा नये कौशल जुड़ते चले जाते हैं। और पुराने तरीकों में परिवर्तन होता जाता है।

6. संस्कृति हमें अनेक प्रकार के स्वीकृत व्यवहारों के तरीके प्रदान करती है। यह बताती है कि कैसे एक कार्य को संपादित किया जाना चाहिए, कैसे एक व्यक्ति को समुचित व्यवहार करना चाहिए।

7. संस्कृति भिन्न होती है- यह ऐसी व्यवस्था है जिसमें विभिन्न पारस्परिक भाग एक दूसरे पर आश्रित हैं। यदि ये भाग अलग होते हैं, वे संस्कृति को पूर्ण रूप प्रदान करने में एक दूसरे पर आश्रित होते हैं।

8. संस्कृति अक्सर वैचारिक होती है- एक व्यक्ति से उन विचारों का पालन करने की आशा की जाती है जिससे आप! यह एक आदर्श तरीका प्रस्तुत करती है

Scanned with CamScanner

(4)

Page No.:
Date:

संस्कृति के कार्य तथा व्यक्ति का योगदान

1. संस्कृति की निरन्तरता :→ शिक्षा का अन्य कार्य संस्कृति निरन्तरता को बनाये रखना है। वह सांस्कृतिक, परम्पराओं रीतियों तथा अनुभव को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचालित करती है।

2. व्यक्तित्व का विकास :→ व्यक्तित्व मनुष्य के व्यवहार के प्रतिमानों से स्पष्ट होता है। मानव व्यवहार उसके अपने परिवेश की संस्कृति पर प्रभाव डालता है। भारतीय मनुष्य के व्यक्तित्व पर भारतीय संस्कृति की और पाश्चात्य मनुष्य के व्यक्तित्व पर पाश्चात्य संस्कृति की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। संस्कृति व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक सभी पहलुओं को प्रभावित करती है।

3. प्राकृतिक परिवेश से समायोजन :→ मनुष्य हर जगह किसी न किसी प्रकार से प्राकृतिक परिवेश में रहता है बिना परिवेश के समायोजन से उसका जीवन नहीं चलता। प्राकृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण भिन्न-2 मानव समूहों में संस्कृति अन्तर हो जाता है इसी के आधार पर उनके व्यवहार में भिन्नता पाई जाती है।

4. संस्कृति का संरक्षण :→ शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृति विरासत का संरक्षण है, स्कूलों में सांस्कृतिक गुणों का विकास किया जाता है। राधाकृष्णन ने भी शिक्षा के संरक्षणात्मक कार्य पर बल दिया गया है उनके अनुसार भारतीय सांस्कृतिक विरासत का केन्द्र है। सुन्दरता और सत्य से प्रेम सहनशीलता, अन्य संस्कृतियों का आत्मसात करने की योग्यता का निर्माण है

Scanned with CamScanner

5 समाजीकरण :→ समाजीकरण की प्रक्रिया में संस्कृति का बहुत योगदान है राल्फ लिन्टन के अनुसार व्यक्ति तीन प्रकार से संस्कृति के अंगों में भाग ले सकता है पहला सार्वभौमिक है जिसमें व्यक्ति अच्छी आदतों, विचारों और संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को अपनाता है। दूसरा व्यक्ति विशेष है जिसमें व्यक्ति संस्कृति के उन तत्वों को ग्रहण करता है। जो कि समाज के विशिष्ट अंगों विशेष व्यवसाय तथा विशिष्ट लिंग वाले व्यक्तियों में पाए जाते हैं तीसरे, व्यक्ति वैकल्पिक है जो समाज के कुछ ही व्यक्तियों द्वारा अपनाए जाते हैं।

6 संस्कृति का विकास। – शिक्षा संस्कृति के प्रसार एवं विकास में सहायता करती है। संस्कृति प्रत्येक पीढ़ी को वही ~~सीखनी~~ है सीखना है जो उसके पूर्वजों ने सीखा है तो किसी प्रकार का बौद्धिक एवं सामाजिक विकास सम्भव नहीं हो सकेगा।

7 नये सांस्कृतिक प्रतिमान।→ शिक्षा केवल संस्कृति का हस्तांतरण ही नहीं करती, बल्कि संस्कृति के नए प्रतिमानों का निर्माण करती है। नए ज्ञान के निर्माण के लिए सांस्कृतिक परिवर्तन अत्यन्त आवश्यक है।

संस्कृति का महत्व।→ संस्कृति जीवन के निकट से जुड़ी है यह कोई बाह्य वस्तु नहीं है और न ही आभूषण है जिसे मनुष्य प्रयोग कर सकें। संस्कृति हमें जीवन जीने का तरीका सिखाती है, मानव ही संस्कृति का निर्माता है और साथ ही संस्कृति मानव को मानव बनाती है। संस्कृति का एक मौलिक तत्व है धार्मिक विश्वास और उसकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है संस्कृति हमें दर्शन और धर्म के माध्यम से सत्य के निकट लाती है। यह हमारे जीवन में कलाओं के माध्यम से सौन्दर्य प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner

संस्कृति शिक्षा के पक्षों पर प्रभाव

1. शिक्षा के उद्देश्य
↓
2. पाठ्यक्रम
↓
3. शिक्षण विधियाँ
↓
4. अनुशासन

5. पाठ्य-पुस्तकों पर प्रभाव
↓
6. स्कूलों के प्रतिमान
↓
7. संस्कृति का अध्यापक पर प्रभाव

1. शिक्षा के उद्देश्य अनेक देशों में अपने-2 तरीकों पर आधारित होते हैं। जैसे रूस की शिक्षा व्यवस्था का बल 'नए मनुष्य के निर्माण' पर है अमेरिका में शिक्षा का उद्देश्य समाजीकरण और प्रजातंत्रीकरण स्थापित करना है।

2. किसी समाज का शैक्षिक पाठ्यक्रम उसी समाज के सांस्कृतिक मूल्यों पर निर्भर करता है। मूल्यों की पहचान और समाज की सांस्कृतिक आवश्यकताओं को उस पाठ्यक्रम में जोड़ती है।

3. पुराने समय में शिक्षा-प्रसार एवं शिक्षा का केन्द्र अध्यापक ही होता था पहले बच्चों से शिक्षा को रटवाया जाता था जबरदस्ती, लेकिन ~~अब~~ समय बदल गया है आज शिक्षा का केन्द्र विद्यार्थी है न की अध्यापक आज शिक्षा विद्यार्थियों को वर्तमान एवं भविष्य में प्रभावी रूप से रहने के लिए तैयार करने का माध्यम है

4. आज विश्व की संस्कृति को बनाए रखने के लिए प्रभावशाली अनुशासन की आवश्यकता है। इस संस्कृति द्वारा मानव एव समाज को सुसंस्कृत बनाया जा सकता है

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष । → अतः हम कह सकते हैं कि संस्कृति जीवन की विधि है। जो भोजन हम खाते हैं जो कपड़े पहनते हैं जो भाषा बोलते हैं ये सभी संस्कृति की सृजित है। इस प्रकार संस्कृति मानव जनित मानसिक पर्यावरण से सम्बन्ध रखती है। संस्कृति के दो पक्ष होते हैं भौतिक तथा अभौतिक। भौतिक संस्कृति के हमारी वेशभूषा, भोजन घरेलू सामान आदि। अभौतिक संस्कृति का सम्बन्ध विचारों, आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से है।

Unit 2 (1)

Page No.:
Date:

Q. सांख्य - दर्शन का क्या अर्थ है? सांख्य दर्शन के पाठ्यक्रम, शैक्षिक उद्देश्यों शिक्षक, शिक्षण विधियाँ, छात्र अनुशासन तथा शैक्षिक महत्व का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

Ans सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल हैं यहाँ पर सांख्या शब्द अथवा ज्ञान के अर्थ में लिया गया है भारतीय दर्शन के छः प्रकारों में से सांख्या दर्शन भी एक है जो ~~[illegible]~~ प्राचीनकाल में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। यह अद्वैत वेदान्त से सर्वथा विपरीत रखने वाला दर्शन है गीता में भी सांख्य दर्शन शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ था

सांख्य का शाब्दिक अर्थ है - संख्या सम्बन्धी या विश्लेषण। इसकी सबसे प्रमुख धारणा सृष्टि के प्रकृति - पुरुष से बनी है भारतीय संस्कृति में किसी समय सांख्या दर्शन का अत्यन्त ऊंचा स्थान था। शान्ति पर्व में कई स्थलों पर सांख्या दर्शन के विचारों का बड़े काव्यमय और रोचक ढंग से उल्लेख किया गया है

सांख्य के प्रमुख ~~[illegible]~~ तत्व :→

प्रकृति→ सांख्य दर्शन में प्रकृति को त्रिगुण भी संज्ञा दी गई है। सांख्य दर्शन में इन तीन गुणों को सूक्ष्म तथा अतेन्द्रिय माना गया सत्व गुणों का कार्य सुख रजोगुण का कार्य लोभ बताया गया सत्व गुण स्वच्छता एवं ज्ञान का प्रतीक है। रजोगुण दुःख तथा अशान्ति का प्रतीक है तमोगुण दुःख तथा अशान्ति का प्रतीक है सांख्य दर्शन के अनुसार ये तीन गुण एक-दूजे के विरोधी है। परन्तु आपस में विरोधी होने के उपरान्त भी ये तीनों गुण प्रकृति में एक साथ पाए जाते हैं

Scanned with CamScanner

* पुरुष :- सांख्य दर्शन प्रकृति तथा पुरुष की स्वतन्त्र सत्ता पर प्रकाश डालता है प्रकृति जड़ एवं पुरुष चेतन है यह प्रकृति सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाली है। पुरुष चैतन्य है परम तत्व आत्मा तत्व है यह पुरुष समस्त ज्ञान एवं अनुभव को प्राप्त करता है। प्रकृति एवं पदार्थ जड़ होने के कारण स्वयं अपना उपभोग नहीं कर सकते परन्तु प्रायः ये पदार्थ दुःख देते हैं। तब पुरुष दुःख की अनुभूति करते सांख्य दर्शन उन आध्यात्मिक स्वभाव के ज्ञानी पुरुषों पर भी प्रकाश डालता है। जो सदैव उन दुःखों से परे रहकर मोक्ष की इच्छा करते हैं

* सृष्टि क्रम :- सांख्य दर्शन में सृष्टि क्रम पर प्रकाश डाला गया है प्रकृति से सर्वप्रथम महत्तत्व अथवा बुद्धि की उत्पत्ति, अहंकार की उत्पत्ति एवं सात्विक राजनैतिक एवं तामसिक अहंकार के रूप में अहंकारों के तीन भेद करते हुए सात्विक अहंकार से मन की उत्पत्ति क्रम को समझाया गया। इसी से ही ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियो की उत्पत्ति को तथा अहंकार के तामसिक भाग से पंचतन्मात्राओं एवं पंच महाभूतों की उत्पत्ति को समझाया गया है इस प्रकार २४ तत्वों के साथ २५ वे तत्व के रूप में पुरुष तत्व को समझाया गया है

प्रकृति + पुरुष

↓

महत या बुद्धि

↓

अहंकार

↓

सात्विक, तामसिक | राजसिक

(3)

- 5 ज्ञानेन्द्रिय
- 5 कर्मेन्द्रिय
- 1 मन

5 महाभूत
5 तन्मात्रा

बंधन एवं मोक्ष !→ सांख्य दर्शन के अनुसार अज्ञानता के कारण पुरुष बंधन में बंध जाता है जबकि यह पुरुष ज्ञान के द्वारा मोक्ष को प्राप्त करता है। बंधन में बंधा हुआ पुरुष आध्यात्मिक आधिभौतिक एवं आधिदैविक दुःखों से ग्रस्त रहता है मैं और मेरे भाव से युक्त होकर पुरुष इस बंधन में फस जाता है परन्तु जब पुरुष का विवेक ज्ञान जागृत होता है ज्ञानरूपी प्रकाश जब उसका अज्ञानतारूपी अन्धकार समाप्त हो जाता है। इस अवस्था वह विशुद्ध परमात्मा का स्वरूप ग्रहण करने लगता है इसे ही मुक्ति एवं कैवल्य की संज्ञा दी गयी है

सत्कार्यवाद !→ सांख्य दर्शन का मुख्य आधार सत्कार्यवाद है इस सिद्धान्त के अनुसार, बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती। कार्य, अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है कार्य अपने कारण का सार है। कार्य और कारण वस्तुतः समान प्रक्रिया के व्यक्त - अव्यक्त रूप है सत्कार्यवाद के दो भेद है !- परिणामवाद तथा विवर्तवाद।

* परिणामवाद से तात्पर्य है कि कारण वास्तविक रूप में कार्य में परिवर्तित हो जाता है जैसे तिल तेल में, दूध दही में रूपांतरित होता है।
* विवर्तवाद !→ के अनुसार परिवर्तन वास्तविक न होकर आभास मात्र होता है। जैसे - रस्सी में सर्प का आभास होना।

सांख्य दर्शन का शैक्षिक पद्धतियों में योगदान

१. पाठ्यक्रम :→ पाठ्यक्रम को निर्धारित करते समय तीन बिंदुओं पर छात्रों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है।

(i) छात्रों को परम सत्य से परिचित कराना तथा उन्हें उसकी प्राप्ति हेतु अभ्यास करना।

(ii) छात्रों की समस्त मानसिक शक्तियों को अधिक से अधिक विकसित एवं परिपक्व बनाना।

(iii) छात्रों में शारीरिक और मानसिक कौशलों का ज्ञान करना। यह कौशल ही छात्रों को व्यवसाय में समृद्ध बना सकेंगे।

२. शिक्षा के उद्देश्य :-

(i) सांख्य दर्शन के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक को मुक्ति मार्ग प्राप्त करना तथा उन्हें अंधकार से प्रकाश ज्ञान की ओर ले जाना है।

(ii) बालक में क्रियाशीलता पैदा करके शिक्षा के माध्यम से उसका शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास करना।

(iii) मानव जीवन की पूर्णता के लिए शरीर तथा आत्मा के बीच उचित प्रकार के समायोजन का विकास करना है।

(iv) शिक्षा का लौकिक उद्देश्य यह है कि बालक के सात्विक पक्ष का विकास करें तथा उसे तामसिक व राजसिक पक्षों से मुक्ति दिलायें।

(v) बाह्य जगत के अनुभवों के द्वारा बालक का बौद्धिक विकास करना।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

(5)

3 शिक्षक :- सांख्य दर्शन में एक ऐसे अध्यापक की आवश्यकता होती है जिसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो, जिससे कि वह छात्रों में आत्म ज्ञान उपलब्ध करा सके। उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह पूर्णत: त्यागी प्रवृति का हो जिससे की वह छात्रों की प्रवृति के आधार पर स्पष्ट कर सके। छात्रों की जिज्ञासाओं तथा समस्या सुलझाने का प्रयास करे जो बालक के विकास में बाधक है

4 सांख्य दर्शन शिक्षण विधियाँ :- सांख्य दर्शन प्रत्यक्ष विधि पर बल देता है। निरीक्षण विधि तथा प्रयोग विधि को भी आवश्यक मानता है प्रत्यक्ष वस्तुओं वातावरण तथा घटनाओं के अध्ययन कराने के लिए अनुभव द्वारा शिक्षा भी विधी उपयोगी है ज्ञात से अज्ञात, प्रश्नोत्तर, चर्चा, विचार, व्याख्यान अन्य विधियों को भी अपनाया है

5 छात्र अनुशासन :- तीन प्रकार के दुःख इस संसार में है दैहिक, आधि दैविक तथा आधि भौतिक

1. सांख्य के अनुसार अपने वास्तविक स्वरूप को जानने से जीवन दुःखों से मुक्त हो जाता है बंधन का अर्थ है आत्मा और मोक्ष का अर्थ है जानना। कर्म से मोक्ष नहीं मिल सकता। ज्ञान मनुष्य को मोक्ष दिलाता है शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना है। केवल ज्ञान से ही अज्ञान दूर किया जा सकता है

2. प्रकृति संसार का मूल कारण है प्रत्येक वस्तु का कारण होता है परंतु, प्रकृति का कोई कारण नहीं है। संसार के समस्त कार्य प्रकृति पर आधारित है

3 पुरुष आत्मा है विजयी और ज्ञाता है। आत्मा शरीर, मानस अहंकार तथा बुद्धि नहीं। आत्मा स्वयं ही शुद्ध चैतन्य है

Scanned with CamScanner

(6)

Page No.:
Date:

4 जगत की उत्पत्ति विकास से होती है विकास पुरुष और प्रकृति के संसर्ग से होता है सांख्य दर्शन पुरुष को निष्क्रिय मानता है।

5 अकेला पुरुष उत्पत्ति नहीं कर सकता। प्रकृति जड़ है और जड़ होने के कारण प्रकृति अकेली उत्पत्ति नहीं कर सकती। प्रकृति की क्रिया तथा पुरुष के चैतन्य का साथ होने पर ही प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप सृष्टि का विकास होता है

सांख्य दर्शन शैक्षिक महत्व :→ लौकिक जीवन पर अधिक महत्व दिया है आध्यात्मिक जगत की बात नहीं।

1. यह वैयक्तिक विभिन्नताओं की ओर संकेत करता है इसके प्रकृति के तीनों गुणों की व्याख्या की गई थी हर प्राणी में अलग - 2 गुणों का विकास होता है

2 बाल विकास का वर्णन आज के मनोवैज्ञानिक विकास की अवस्थाओं की ओर संकेत करता है

3 यह व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक दोनों है ज्ञान की विभिन्न शाखाओं को अपने में समावेश करने का प्रयास किया है

4 इसका विभिन्न नवीनतम विधियों के क्षेत्र में अपरिमित योगदान है

5 प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को महत्व देने के कारण यह लोकतान्त्रिक विचार का मार्गदर्शन करने की प्रेरणा प्रदान करता है

6 जिन विधियों का इसने प्रतिपादन किया है वे किसी न किसी रूप में आज के वैज्ञानिक युग में भी मान्य है

Q. शिक्षा में आदर्शवाद के दर्शन को स्पष्ट करते हुए यह बताएं कि भारतीय विद्यालयों में आप कैसे क्रियान्वित करेंगे।

Ans आदर्शवाद विचारवाद या प्रत्ययवाद भी कहा जाता है विश्व की सबसे पुरानी विचार धारा मानी जाती है जिसका प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से पड़ा है। पाश्चात्य देशों में आदर्शवाद का प्रतिपादन दार्शनिक प्लेटो अरस्तु एवं सुकरात किया है। आधुनिक युग में आदर्शवादी दार्शनिकों में डेकार्ट स्पिनोजा, लाइबनिज बर्कले, कान्ट प्रमुख है। शिक्षा का आदर्शवादी विचारधारा के प्रवर्तकों में कमेनियस पेस्टलॉजी तथा फ्रोबेल मुख्य है। भारतीय दार्शनिकों में महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविंद तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर की गणना की जा सकती है

आदर्शवाद का अर्थ! → अंग्रेजी भाषा के शब्द Idealism से लिया गया है जो दो शब्दों के मेल से बना है। जैसे Idea + ism।
आइडिया का अर्थ है विचार और
इज्म का अर्थ है वाद] अर्थात विचारवाद।
जो भौतिक वस्तुओं की अपेक्षा विचारों पर बल देती है विचारों का संबंध मन से है जो कभी नहीं मरता। भौतिक संसार परिवर्तनशील है तथा ज्ञान कम समय के लिए रहता है। जबकि विचार सदैव रहता है।

परिभाषाएं !—

* डी. एम. दत्ता के अनुसार → " आदर्शवाद वह सिद्धान्त है जो अन्तिम सत्ता आध्यात्मिक मानता है"

* जे. एस. रस के अनुसार → "आदर्शवादियों का विश्वास है कि ब्रह्माण्ड की अपनी बुद्धि एवं इच्छा और सब भौतिक वस्तुओं को उनके पीछे विद्यमान मन द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है"

Scanned with CamScanner

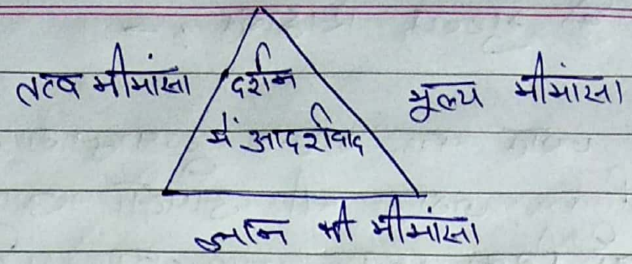

* 1. तत्व मीमांसा :→ सभी आदर्शवादियों की मान्यता है कि यह जगत भौतिक नहीं अपितु मानसिक या आध्यात्मिक है। जगत विचारों की एक व्यवस्था, कल्पना का अंगभाग है। प्रकृति मन की क्रिया या प्रतीति है भौतिक सृष्टि का आधार मानसिक जगत है, जो उसे समझता है तथा मूल्य प्रदान करता है। मानसिक जगत के अभाव में भौतिक जगत अर्थहीन हो जायेगा। आदर्शवादी विचारक आत्मा और परमात्मा में विश्वास करते हैं मानव द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा का ज्ञान है परमात्मा को सत्ता का स्थापित मानते हैं।

* ज्ञान मीमांसा :→ मानव में मन होता है जिसकी सहायता से वह ज्ञान एकत्रित करता है। मानव ज्ञान की प्राप्ति ज्ञानेन्द्रियों के अलावा दूसरे साधनों से भी प्राप्त करता है प्लेटो ने कहा है कि इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान अपूर्ण तथा अनिश्चित है क्योंकि यह ज्ञान परिवर्तनशील व असत्य होता है। इसलिए सत्य भौतिक जगत में नहीं बल्कि विचार में निहित है। अंतर्ज्ञा, प्रमाण, ईश्वर प्रदत्त ज्ञान, चिंतन, समाधि, निर्वाण आदि को ज्ञान प्राप्त के विभिन्न साधन माने जाते हैं।

* मूल्य मीमांसा :→ आदर्शवाद का वास्तविक अर्थ नैतिक मूल्यों, सात्विक मूल्यों को प्राप्त करना है आत्मानुभूति से प्राप्त ज्ञान सत्यम, शिवम, सुंदरम। आदर्शवाद की नैतिकता परम सत्ता पर आधारित है मानवीय समाज पर नहीं। आदर्शवाद देशभक्ति, राज्य की आज्ञा का पालन व राज्य को सर्वोपरि मानता है व्यक्ति के सार्वजनिक हित के लिए व्यक्तिगत हित त्याग देने चाहिए।

Scanned with CamScanner

आदर्शवाद के मुख्य सिद्धांत :→

1. आध्यात्मिक जगत का महत्व एवं ज्ञान :→ आध्यात्मिक जगत भौतिक जगत की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण व सत्य है। भौतिक जगत नाशवान, परिवर्तनशील है जबकि आध्यात्मिक जगत संपूर्ण, अनश्वर, चिरंतन अपरिवर्तनशील है। वास्तविक है कि जीवन का परम लक्ष्य आध्यात्मिक जगत को समझना है।

2. मनुष्य का महत्व एवं संसार का केंद्र बिंदु :→ आदर्शवाद प्रकृति की बजाय मनुष्य को अधिक महत्व देता है मनुष्य विवेकपूर्ण तथा बुद्धि युक्त प्राणी है। इस प्रकार मनुष्य ही केवल आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ी में हस्तांतरित करता है। मानवीय व्यक्तित्व सर्वश्रेष्ठ है। आत्म-अनुभव द्वारा वह शुद्ध नैतिक मूल्यों को जान सकता है।

3. विचारों का महत्व :→ वस्तु की अपेक्षा विचार को अधिक महत्व देते हैं। विचार ही सत्य है और वास्तविक है वस्तु नहीं

4. आध्यात्मिक मूल्यों का महत्व :→ जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त करना है सत्यं, शिवं सुंदरम्। जो मनुष्य इन आध्यात्मिक मूल्यों को जान जाता है वह ईश्वर को जान जाता है हमारे मन की प्रक्रियाएं, ज्ञान, इच्छा और क्रिया इन मूल्यों को जानने में मदद करती हैं

5. मानवीय मन की स्वतंत्रता :→ मानवीय मन की स्वतंत्रता सर्वोच्च गुण है। स्वतंत्रता का अर्थ अज्ञान, आवश्यकताओं तथा विषय-विकारों से मुक्त होना है। अज्ञान की चेतना ज्ञान का आरंभ है

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

6. एकता में विभिन्नता का सिद्धान्त :→ आदर्शवादी विभिन्नता में एकता पर विश्वास रखते हैं संसार की सभी वस्तुओं में भिन्नता होते हुए भी एकता है इसी प्रकार संसार के विभिन्न अंग इस एकत्व रूपी केंद्रीय शक्ति के द्वारा अपना - 2 कार्य करते हैं। यह केंद्रीय शक्ति ईश्वर है।

7. व्यक्तित्व के विकास की महत्ता :→ मनुष्य का व्यक्तित्व अधिक महत्वशाली है जीवन का लक्ष्य आध्यात्मिकता प्राप्त करना है जिसमें आत्मा ज्ञान हो जाए। समाज में रहकर भी मनुष्य ऐसा ज्ञान प्राप्त कर सकता है उसे इस प्रकार की शिक्षा मिलनी चाहिए कि उसमें स्वाभाविक गुण जैसे सहयोग, दया तथा प्रेम आदि विकसित हो जाए।

8. वास्तविक ज्ञान मन में निवास करता है आदर्शवादी मानते थे कि इन्द्रियां की मदद से प्राप्त ज्ञान मन की क्रियाओं द्वारा प्राप्त करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है परमात्मा ने मानव मन को सर्वोच्च रूप प्रदान किया है

9. वस्तुओं के जगत की अपेक्षा का जगत महत्वपूर्ण माना है विचार ही सत्य और वास्तविक है, वस्तु नहीं

10. सामाजिक विज्ञानों और आदर्श विज्ञानों पर विशेष बल :→ ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें आदर्श सामाजिक विज्ञान की सहायता लेनी होगी आदर्श विज्ञान में नीतिशास्त्र, सौंदर्य शास्त्र तथा तर्क शास्त्र ये तीनों है मनोविज्ञान तथा समाज शास्त्र ये सामाजिक विज्ञान है। इन विज्ञानों के आधार पर संसार के ज्ञान को प्राप्त करते हैं

11. आत्मा एक आध्यात्मिक तत्व है व परमात्मा सर्वश्रेष्ठ आत्मा है

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date:

शिक्षा के उद्देश्य :→

1. आत्मानुभूति :→ शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति है आत्मानुभूति का अर्थ है स्वयं को समझने में। अर्थात "स्वयं को जानो"। प्रत्येक बालक गुणों का विकास करके ही आदर्श व्यवस्था प्राप्त कर सकता है दार्शनिकों के जीवन तथा शिक्षण का उद्देश्य आत्मज्ञान की प्राप्ति ही ही माना आत्मानुभूति ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य है और शिक्षा का उद्देश्य है।

2. व्यक्तित्व का विकास :→ शिक्षा के द्वारा मानव के व्यक्तित्व का विकास करना और उसके अंदर निहित सर्वोच्च शक्तियों को वास्तविक बनाना चाहिए है। शिक्षा का उद्देश्य आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण तथा विकास करना है।

3. आध्यात्मिक मूल्यों की अनुभूति व उन्नति करना :→ आध्यात्मिक उन्नति के लिए इन ~~[illegible]~~ मूल्यों को समझना चाहिए जो पूर्ण सत्यम, शिवम, सुंदरम की प्राप्ति में आवश्यक है। इस प्रकार ~~की~~ बालकों को शिक्षा देनी चाहिए कि वह इन मूल्यों की अनुभूति कर सके।

4. सांस्कृतिक विरासत की रक्षा एवं वृद्धि :→ मनुष्य एक बुद्धि युक्त प्राणी है उसने रचनात्मक कार्यों द्वारा सांस्कृतिक वातावरण की रचना है धर्म, नैतिकता, कला, साहित्य, विज्ञान तथा गणित आदि इस सांस्कृतिक वातावरण के रूप है शिक्षा को आध्यात्मिक संसार की सीमाओं को विस्तृत करके संस्कृति के विकास में योगदान देना

5. पवित्र जीवन की प्राप्ति :→ शिक्षा को मनुष्य का पथ प्रदर्शन इस प्रकार करना चाहिए कि उसे अपने आपका, प्रकृति का सामना करने का और ईश्वर से एकता स्थापित करने का स्पष्ट ज्ञान हो।" शिक्षा के द्वारा बालक में अच्छे व बुरे में उचित व अनुचित अंतर करने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

6 निश्चयात्मक शिक्षा :- यह शाश्वत सत्य पर आधारित होनी चाहिए। शिक्षा निश्चयात्मक होनी चाहिए यह विवेक, व्यवस्थित तथा धर्म विश्व को समझने के लिए शाश्वत मूल्यों का ज्ञान होना चाहिए।

7. शिक्षा का उद्देश्य सादा जीवन तथा ऊंचा चिन्तन होना चाहिए ताकि मन को नियन्त्रण कर सके।

8. बालक की शिक्षा कुछ प्रकार की होनी चाहिए जिससे वह अपने आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त कर सके।

* आदर्शवाद और पाठ्यक्रम :→ ऐसा पाठ्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए जो मनुष्य के विचारों, आदर्शों तथा अनुभवों पर आधारित हो पाठ्यक्रम में मानव जाति के संपूर्ण अनुभवों तथा समाज की सभ्यता व संस्कृति को ऊंचा स्थान मिलना चाहिए।

प्लेटो के अनुसार पाठ्यक्रम

(1) बौद्धिक
भाषा
साहित्य
इतिहास
भूगोल
गणित एवं विज्ञान

(2) कलात्मक
काव्य
कलाएं

3. नैतिक
धर्म
नीतिशास्त्र

आदर्शवाद और शिक्षण विधियां :→ अनेक शिक्षण विधियों का प्रयोग किया है

प्रश्न विधि (सुकरात), संवादवाद विधि (प्लेटो) आगमन तथा निगमन विधि (अरस्तू), सरल से जटिल की ओर (डिकार्टे) व्याख्यान द्वारा शिक्षा, खेल कूद विधि, तर्क विधि निर्देश विधि।

आदर्शवाद स्वयं को किसी एक विधि का भक्त न मानकर, विधियों का निर्माता व निर्धारक समझते है

Scanned with CamScanner

* आदर्शवाद तथा अध्यापक :→ अध्यापक का स्थान बहुत ऊँचा है बच्चों को इस प्रकार का मार्गदर्शन करना चाहिए। जिससे वह अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़े। शिक्षा में अध्यापक का स्थान आदरणीय व गौरवमय है, उसका स्थान ईश्वर के बाद है, वह बालक को ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता बताता है।

* आदर्शवाद तथा अनुशासन :→ प्रभावात्मक अनुशासन के पक्षधर हैं। बालक के लिए अनुशासन आवश्यक है वह अपने उच्च आदर्शों से बालक को इस प्रकार प्रभावित करे जिससे उसके अंदर अनुशासन अपने आप ही विकसित हो जाये। इस प्रकार का अनुशासन अधिक स्थायी होता है।

* आदर्शवाद तथा विद्यालय :→ आदर्शवादियों ने शिक्षा के लिए विद्यालय को अत्यन्त आवश्यक माना है। विद्यालय वह स्थान है। जहाँ पर बालकों को विचार और तर्क करने के लिए उचित पथ-प्रदर्शन प्राप्त होता है जहाँ सामाजिक गुणों का विकास होता है। आदर्शवाद का विद्यालय सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त पर आधारित है वे विद्यालय के आंतरिक पक्ष पर अधिक बल देते हैं।

* आदर्शवाद तथा बालक :→ शिक्षा में आदर्शों या विचारों को प्रमुख स्थान दिया है। बालकों में इन आदर्शों और विचारों को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा देना और उनमें शुभ-शुभ का विकास करना शिक्षक का परम कर्तव्य है।

निष्कर्ष :→

आदर्शवादी परम सत्य में विश्वास करता है वह शिक्षा को पवित्र कार्य मानता है आदर्शवाद ने आत्मानुभूति जैसा शिक्षा का उद्देश्य देकर, अनेकता में एकता की अंतर्दृष्टि प्रदान करके एवं "सत्यम शिवम सुन्दरम" की प्राप्ति की।

Scanned with CamScanner

①

Q. शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, अनुशासन एवं अध्यापक के विषय में प्रकृतिवादियों के विचारों की विवेचना कीजिए।

प्रकृतिवाद :→

Ans पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तन की वह विचार धारा है जो प्रकृति को मूल तत्व मानती है, इसी को इस ब्रह्माण्ड का कर्ता तथा उपादान मानती है प्रकृतिवादी विचारक बुद्धि को विशेष महत्व देते हैं। बुद्धि का कार्य केवल बाह्य परिस्थितियों तथा विचारों को काम में लाना है जो उसकी शक्ति से बाहर जन्म लेते हैं। प्रकृतिवादी आत्मा - परमात्मा की सत्ता में विश्वास नहीं करते हैं। वे प्रकृति को ही पूर्ण शक्तिमान मानते हैं

प्रकृति का अर्थ :→ वह वस्तु जो स्वाभाविक रूप में या प्राकृतिक रूप में विकसित हो और जिसकी रचना में मनुष्य का कोई सहयोग नहीं होता भौतिक प्रकृति बाह्य प्रकृति है जो हमेशा संसार का मूल कारण माना जाता है इसमें प्रकृति के उन नियमों को लिया जाता है, जिसके कारण संसार की वस्तुओं का निर्माण होता है ये नियम सदैव एक से रहते हैं उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता

* बालक की आंतरिक प्रकृति जिसका अर्थ उन मूल प्रवृत्तियों, आवेगों तथा क्षमताओं से है जिनको लेकर बालक जन्म लेता है।

परिभाषाएं :→

एडम्स के अनुसार, " प्रकृतिवाद को शिक्षा की उन प्रणालियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो स्कूलों तथा पुस्तकों पर निर्भर नहीं है अपितु विद्यार्थी के वास्तविक जीवन को सीधे मार्ग पर डालती है

* थॉमस एवं लॉग :- "प्रकृतिवाद आदर्शवाद के विपरीत मन को पदार्थ के अधीन मानता है और विश्वास करता है कि अन्तिम वास्तविकता भौतिक है आध्यात्मिक नहीं।

* रस्क : प्रकृतिवाद एक दर्शन है जो उन लोगों द्वारा अपनाया जाता है जो दार्शनिक वैज्ञानिक व्याख्या करते हैं।"

शिक्षा में प्रकृतिवाद :→ शिक्षा में प्रकृतिवाद का अर्थ है ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जिससे बालक अपनी प्रकृति के अनुसार विकसित होता है रूसो ने एक महान ग्रंथ "एमाइल एण्ड एजुकेशन" की रचना की जिसमें केवल प्रकृति को ही सर्वश्रेष्ठ अध्यापक मानते हुए शिक्षा को एक प्राकृतिक क्रिया माना है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को प्रौढ़ जीवन के लिए तैयार करना नहीं अपितु मानव का विकास करना है जो केवल उसी समय हो सकता है जब बालक को स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान किये जाए।

शिक्षा का अर्थ :→ हरबर्ट स्पेन्सर

"शिक्षा का अर्थ जन्मजात शक्तियों का बाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है।" शिक्षा में प्रकृतिवाद ने बालक को मुख्य स्थान दिया है। पुस्तकीय ज्ञान को महत्व नहीं दिया उनका मानना है कि मनुष्य प्रकृति के अनुकूल विकास करके तथा जीवन को सुखमय बनाने में सहायता करती है।

प्रकृतिवाद शिक्षा की विशेषताएं :→

1. प्रकृति का अनुसरण
2. बालक शिक्षा का केन्द्र
3. पुस्तकीय ज्ञान का विरोध

Scanned with CamScanner

4. इन्द्रिय शिक्षा पर बल
5. बालक की स्वतन्त्रता पर बल
6. बालक की प्रवृतियों पर बल
7. प्रगतिवादी
8. निषेधात्मक शिक्षा

1. प्रकृति की दो रूप में व्याख्या की है भौतिक प्रकृति आंतरिक। भौतिक प्रकृति, प्रकृति का बाह्य रूप है। यह अधिगम के नियम प्रदान करता है जबकि आंतरिक, शक्तियों, संवेगों, क्षमताओं से है।

2. प्रकृतिवादी बालक को शिक्षा रुपी क्रिया का केन्द्र बिंदु मानता है बालक की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि बालक अपनी शक्तियों तथा रुचियों को अपनी इच्छानुसार विभिन्न क्रियाओं में भाग लेकर बिना किसी मार्गदर्शन के स्वयं ही विकसित कर सके

3. प्रकृतिवादी ने पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया उन्होंने बालक के जीवन को क्रियाशील बनाने और उनके स्वाभाविक विकास पर बल दिया

4. प्रकृतिवादी ने इन्द्रिय शिक्षा पर बल दिया। इन्द्रियों के माध्यम से ही सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है यदि हम ज्ञान को प्रभावशाली बनाना है तो इन्द्रियों को प्रशिक्षित करना होगा।

5. प्रकृतिवादी बालक को स्वतंत्रता प्रदान करने में विश्वास करते हैं बालक पर किसी प्रकार के बंधन नहीं लगाना चाहिए जिससे उनके स्वाभाविक विकास में किसी भी प्रकार का बंधन न हो बच्चों को घृणा व भय से दूर रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner

6. बालक की अंतः प्रकृति का ज्ञान करना आवश्यक है जिससे बच्चों की मूल प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं, इच्छाओं, शक्तियों, रुचियों, भावनाओं, योग्यताओं आदि सीमाओं को समझकर उन्हीं के आधार पर विकसित होने का अवसर देना चाहिए।

7. प्रकृतिवादी शिक्षा में बालक को बालक न समझकर उसे केवल प्रौढ़ का लघु रूप समझा जाता था। शिक्षा बालक को एक गत्यात्मक प्राणी मानती है जिसका विकास निरंतर होता जा रहा है

8. शिक्षा के उद्देश्य :→

1. शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि प्रत्येक बालक का निजी व्यक्तित्व विकसित हो सके।

2. मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों का दिशा-निर्देश :→ मैकडूगल ने मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों ने उसके चरित्र का सशक्त आधार बताया है। शिक्षा में दिशा-निर्देश के उद्देश्य होने चाहिए जिससे प्राकृतिक तथा सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्त हो।

3. अवकाश के समय का सदुपयोग :→ बालक के अवकाश को समय देती क्रियाओं में बिताना चाहिए जो बालक की रुचि के अनुसार हो तथा विकास के अवसर प्रदान करे, उनके जीवन स्तर के साथ २ रहन सहन के स्तर को भी ऊँचा उठा सके

5. शिक्षा का लक्ष्य मानव की वर्तमान तथा भावी प्रसन्नता व सुख को प्राप्त करना है

5. मानव यंत्र को निपुण बनाना :- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह है कि मानव यन्त्र को अधिक से अधिक अच्छा बनाए, जिससे वह अपने आगामी जीवन में आने वाली समस्याओं को आसानी से सुलझा सके।

6. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को स्वस्थ बनाना व परंपरागत संस्कृति का ज्ञान देना है, जिससे वह अपने देश की संस्कृति व अनुभवों का संरक्षण कर विकास कर सके।

7. बालक को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वह स्वस्थ एवं शक्तिशाली बनने के लिए शारीरिक क्षमताओं एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक प्रवृत्तियों को स्वतन्त्र रूप से विकसित करें।

8. शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को पर्यावरण के साथ अनुकूल करने की क्षमता दे जिससे वह स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढाल सके और परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सके।

9. शिक्षा का उद्देश्य मानव की उन शक्तियों का विकास करना है जो उसे जीवन संघर्ष के लिए तैयार करके जीवित रहने के योग्य बनाए

* प्रकृतिवाद तथा पाठ्यक्रम :- प्रकृतिवाद ने बालक को पाठ्यक्रम का आधार माना है एवं पाठ्यक्रम पर बल दिया जिसमें बालक अपनी रुचियों, अभिरुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं का विकास कर सके।

Scanned with CamScanner

(A) रूसो के अनुसार पाठ्यक्रम : बालक की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार पाठ्यक्रम बताया है

1. शैशवावस्था 2. बाल्यावस्था 3. किशोरावस्था 4. युवावस्था

(B) हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार पाठ्यक्रम

1. आत्म रक्षा संबंधी
2. जीविकोपार्जन संबंधी
3. सन्तति रक्षा "
4. सामाजिक एवं राजनैतिक कार्य
5. खाली समय का सदुपयोग करने संबंधी

* प्रकृति वाद और शिक्षण विधियाँ

1. करके सीखना → 2. खेल द्वारा सीखना → 3. प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सीखना

4. क्रिया विधि → 5. बालक को स्वतन्त्रता → 6. नकारात्मक विधि

* प्रकृतिवादी तथा अनुशासन :→ प्रकृतिवादी सदैव दण्ड में विश्वास करते हैं। रूसो का कथन है - बच्चों को कभी दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए। स्वतन्त्रता सबसे अच्छी चीज है।

स्पेंसर ने कहा "जब एक बालक गिरता है या मेज पर सिर पटकता है तो उसे दर्द का अनुभव होता है। इस दर्द का स्मरण उसे सावधान कर देता है। दर्द के बार-2 होने वाले अनुभवों से वह शिक्षित होने लगता है।"

* प्रकृतिवाद तथा स्कूल संगठन ! → विद्यालय का उद्देश्य बालक के स्वाभाविक विकास में सहयोग प्रदान करना है विद्यालय में किसी प्रकार बाह्य नियंत्रण को स्थान नहीं देते। वे विद्यालय की व्यवस्था को कठोर दृढ़ और कृत्रिम बंधन को स्वीकार नहीं करते हैं। वे नहीं चाहते की बालकों पर किसी प्रकार का दबाव पड़े। वे चाहते हैं कि विद्यालय में स्वतन्त्रता का वातावरण हो जहाँ बालकों को अपने विकास की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो।

* प्रकृतिवाद और बालक। →
बालक जन्म से शुद्ध होता है उसमें अच्छाइयां होती है। शिक्षा का कार्य बालक को इस प्रकार का वातावरण प्रदान करे जिससे वह अपनी इच्छाओं का विकास कर सके। प्रकृतिवादी बालक को समझने पर बल देती है बालक की इच्छाएं, रुचियां एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा देनी चाहिए बालक में किसी प्रकार का ज्ञान जबरन नहीं देना चाहिए

प्रकृतिवाद का मूल्यांकन →
- बाल मनोविज्ञान का विकास
- क्रिया तथा अनुभव
- शिक्षण पद्धतियों के क्षेत्र में योगदान
- अनुशासन की धारणा में क्रांति
- विज्ञान शिक्षण पर बल
- परंपरागत शिक्षण के विरुद्ध

प्रकृतिवाद की सीमाएं

↓

शिक्षा में ऊँचे आदर्शों का अभाव

↓

वर्तमान पर बल

↓

पुस्तकों की अवहेलना

↓

पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को ही अधिक महत्व

↓

बालक की अनियंत्रित स्वतंत्रता

↓

शिक्षक केवल पृष्ठभूमि में

↓

समाज की अवहेलना

↓

प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन उचित नहीं

निष्कर्ष :→ प्रकृतिवाद ने बच्चे को अत्यधिक स्वतंत्रता प्रदान की है। इस अत्याचार निर्दयता तथा कठोर शासन से मुक्त किया है। इसी प्रकार प्रकृतिवाद के द्वारा मनोविज्ञान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया। पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया। शिक्षा की केंद्रीय स्थिति प्रदान की। परन्तु इन विशेषताओं के बावजूद भी हमें यह कहना पड़ेगा कि परम्परागत शिक्षा प्रणाली के विरोध "उत्साह" से बहुत आगे निकल गया।

Scanned with CamScanner

प्रयोजनवाद

Q. प्रयोजनवाद क्या है? प्रयोजनवाद के अनुसार ज्ञान का स्वरूप, मूल्यों की रूपरेखा, पाठ्यक्रम को समझने की अध्यापन विधियों की व्याख्या कीजिए।

Ans. प्रयोजनवाद :→ एक नए आदर्शवाद के विकास की अवस्था है जो वास्तविकता के प्रति पूर्ण न्याय करेगा। क्रिया तथा आध्यात्मिक मूल्यों का संबन्ध करेगा तथा इसके परिणाम स्वरूप ऐसी संस्कृति का निर्माण होगा। जिसमें निपुणता का पूर्ण स्थान होगा न कि उसकी अवहेलना होगी। प्रयोजनवाद परिवर्तन में विश्वास रखता है और हमारा आधुनिक समाज परिवर्तनशील है।

* प्रयोजनवाद का अर्थ :→ प्रयोजनवाद को अंग्रेजी में "प्रैगमैटिज्म" (Pragmatism) कहते हैं जिसका अर्थ है किसी काम अथवा सिद्धान्त को करने के लिए व्यावहारिकता और उपयोगिता का होना अति आवश्यक है। इस मत को मानने वालों का कहना है कि बगैर मकसद के कोई काम नहीं होता यानी हर कार्य के पीछे कारण होता है।

शिक्षाशास्त्र में विलियम जेम्स, जॉन डी. वी. एफ. सी. एस. शिलर को इसका जनक माना जाता है लेकिन विलियम जेम्स को ही शिक्षा में प्रयोजनवाद के जन्मदाता के रूप में माना गया।

* परिभाषाएं :→

* जेम्स प्रैट के अनुसार " प्रयोजनवाद हमें अर्थ, सत्य प्रदान करता है।" ज्ञान तथा वास्तविकता का सिद्धान्त

* विलियम जेम्स के अनुसार " प्रयोजनवाद मन का एक ~~तथा सत्यता का~~ ~~सिद्धा~~ स्वभाव तथा दृष्टिकोण है यह विचारों तथा सत्यता का सिद्धांत भी है।"

रोजन के अनुसार :- प्रयोजनवाद सत्य तथा अर्थ के सिद्धान्त प्रधानता देने के कारण यह ज्ञानवादी विचारधारा है इस विचार धारा के अनुसार सत्य को केवल उसके व्यावहारिक परिणामों से जाना जा सकता है सत्य निरपेक्ष की अपेक्षा सामाजिक वस्तु है।"

* प्रयोजनवाद के नियम या सिद्धान्त :-

1. क्रिया का महत्व :→ प्रयोजनवाद विचारों की अपेक्षा क्रिया को विशेष महत्व देता है क्योंकि विचारों का जन्म सदैव क्रिया के पश्चात होता है शिक्षा में क्रिया द्वारा सीखने के सिद्धान्त प्रयोजनवाद ने महत्व दिया है मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। वह अपने जीवन की लम्बी यात्रा में केवल अपनी क्रियाओं के आधार पर सीखता है

2. उपयोगितावाद :→ प्रयोजनवाद के अनुसार जो विचार अथवा वस्तुएं उपयोगी हैं वे सत्य हैं नहीं तो व्यर्थ हैं किसी वस्तु की सत्यता उसकी उपयोगिता के आधार पर निर्धारित की जा सकती है।

3. वर्तमान तथा भविष्य में विश्वास :→ प्रयोजनवादी भूतकाल में विश्वास नहीं रखते वे तात्कालिक भविष्य में विश्वास रखते हैं वे तात्कालिक जीवन की योजना तो बनाते हैं परन्तु पूरे जीवन की योजना नहीं बनाते। इसलिए प्रयोजनवादी किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा वर्तमान पर अधिक बल देते हैं, प्रयोजनवाद के लिए वही आदर्श है जो अभी और तुरन्त प्राप्त किया जा सकता है न कि कल्पना लोक और दूर भविष्य में।

Scanned with CamScanner

③

Page No.:
Date:

4 मानववाद में विश्वास → प्रयोजनवादी मानववादी है उनका मानना है कि विज्ञान का प्रयोग मानवीय कल्याण तथा सामाजिक समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जाना चाहिए।

5 लचीलेपन में विश्वास :→ संसार में कोई वस्तु स्थिर तथा अन्तिम नहीं है जीवन एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है परिवर्तन प्रकृति का नियम है उसी प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु सदा परिवर्तन और प्रवाह की अवस्था में है। समय तथा स्थान के साथ-2 मूल्य भी बदलते रहते हैं। वे निर्मित किए जाते हैं और सदा के लिए निश्चित नहीं होते

6 वास्तविकता अभी निर्माण की अवस्था में है - प्रयोजनवाद के अनुसार वास्तविकता का अभी निर्माण हो रहा है यह पूर्ण निर्मित नहीं है। हमें इसे अपने उद्देश्य तथा इच्छा के अनुसार निर्मित करना होगा।

7 सामाजिक परम्पराओं तथा प्रथाओं का विरोध। → जीवन की वास्तविकताओं पर विश्वास रखते हुए प्रयोजनवादी लकीर का फकीर नहीं बनना चाहते इसलिए उन्होंने, प्राचीनतम प्रथाओं, परम्पराओं तथा प्रचलित रीतियों का घोर विरोधी है।

8 कोई निश्चित महत्व तथा मूल्य नहीं; प्रयोजनवादी मानते हैं कि व्यक्ति के मूल्य व आदर्श निश्चित नहीं होते हैं इनका निर्माण तो व्यक्ति का मस्तिष्क होता है जो नवीन आदर्शों तथा मूल्यों की खोज करते हैं व्यक्ति आवश्यक मूल्यों व आदर्शों को ग्रहण कर लेते हैं और शेष को छोड़ देते हैं

Scanned with CamScanner

9. अनुभव वास्तविकता का केन्द्र → वास्तविकता वह है जिसका मनुष्य अनुभव करता है अनुभव के आधार पर सत्य की खोज की जाती है मानव अनुभव ही जीवन का मूल्य बताता है केवल अनुभव के साथ ही सम्बन्ध रखता है।

10. प्रजातान्त्रिक आदर्शों द्वारा ही मनुष्य अपने मनोरथ पूरे कर सकता है और अपने कार्यों में कुशलता प्राप्त कर सकता है।

11. मानव के अभिप्रायों तथा इच्छाओं को पूर्ण करने वाली शक्ति ही सत्यता है। सत्यता क्रियाशील होने पर भी सन्तोषजनक परिणाम दे सकती है।

12. यह संसार अनेक तत्वों से बना है सदैव निर्माण की अवस्था में रहता है।

13. जीवन एक प्रयोगशाला है जिसमें व्यक्ति जीवन में आने वाली बहुत सी समस्याओं का समाधान करने में प्रयोग किया जाता है प्रयोजवाद का प्रयोगों में अटूट विश्वास है।

14. सत्य एक सापेक्ष है जो व्यक्ति के विकास तथा जीवन में आने वाली बाधाओं के अनुसार बदलता रहता है उन बाधाओं को सुलझाने के लिए हमारे मन में नये-२ विचार आने लगते हैं उन विचारों की सहायता से हम अपने जीवन के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।

15 प्रयोजनवाद का विश्वास है कि व्यक्तित्व का विकास केवल वातावरण के साथ प्रतिक्रिया द्वारा ही सम्भव है मनुष्य में अपने वातावरण को अपनी आवश्यकताओं, उद्देश्यों तथा इच्छाओं के अनुसार ढालने की योग्यता है।

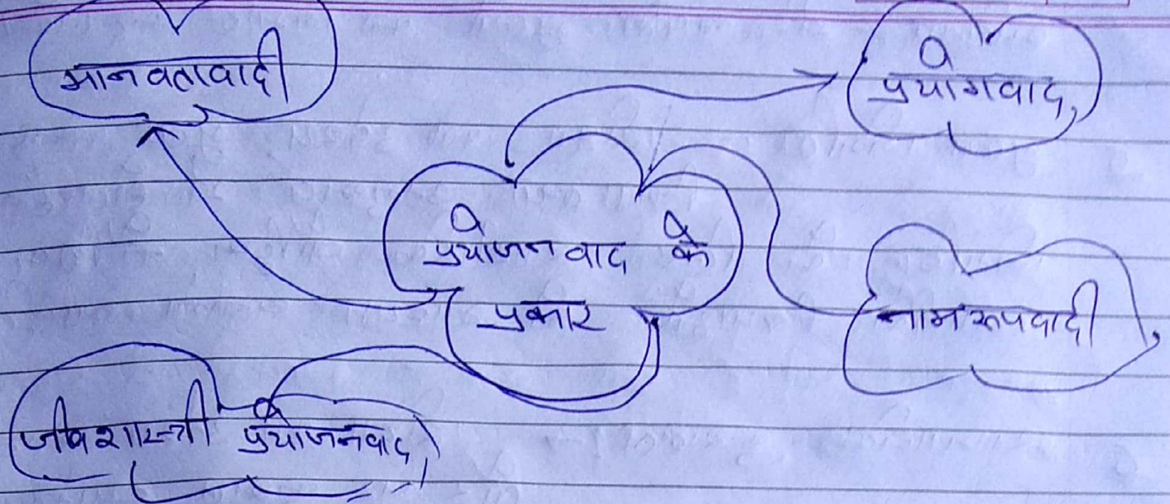

* **शिक्षा के उद्देश्य :→** प्रयोजनवादी शिक्षा का उद्देश्य है और अधिक शिक्षा प्रदान करना। इसका अर्थ है कि प्रत्येक शिक्षा की प्रकृति नवीन शिक्षा का साधन है जो परवर्ती अनुभवों में अपनी प्रगति प्राप्त करती है।

२. व्यक्ति का सामंजस्यपूर्ण विकास :→ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सर्वांगीण विकास होना आवश्यक है जिससे मनुष्य अपने वातावरण के द्वारा अनुभूत आवश्यकताओं को ~~पूर्ण~~ पूरा करने के लिए अनुभव, योग्यताएं, प्रवृत्तियाँ तथा रुचियों का होना जरूरी है।

3 मानव कल्याण के लिए शिक्षा :→ ड्यूवी के अनुसार वस्तु की मानव कल्याण के लिए उपयोगिता ही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा का ध्येय और संगठन, रूप तथा पाठ्यक्रम सब का सम्बन्ध मानव कल्याण से है। वास्तविक जीवन तथा मानव कल्याण के लिए कोई चीज कितनी उपयोगी है यदि वह उपयोगी है तो ठीक है अन्यथा व्यर्थ है।

4 * गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का विकास :→ शिक्षा में उद्देश्य पूर्व निर्धारित नहीं होते। ये देश, काल तथा स्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। इसलिए शिक्षा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का विकास करें जो अज्ञात

Scanned with CamScanner

भविष्य में नवीन मूल्यों का निर्माण कर सके।

5 मूल्य निर्माण :- शिक्षा का उद्देश्य, मूल्य का निर्माण किया तथा अनुभव से होता है मूल्य निर्माण के लिए शारीरिक बौद्धिक, नैतिक तथा धार्मिक क्रियाओं को माध्यम बनाना चाहिए

6 सामाजिक कुशलता :→ शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक तौर पर कुशल व्यक्ति उत्पन्न करना है सामाजिक कुशलता में आर्थिक तथा सांस्कृतिक सम्मिलित है। स्कूल का कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों को ऐसा प्रशिक्षण दे जो उन्हें आज के सामाजिक संसार में पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए योग्य बनाए।

✗ प्रयोजनवाद तथा विद्यार्थी :→ प्रयोजनवादी शिक्षा में बालक को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं उन्होंने बाल-केन्द्रित शिक्षा पर अधिक बल दिया। बालक की जन्मजात शक्तियों योग्यताओं व रुचियों में विश्वास करते हैं, बालक की शिक्षा इन प्राकृतिक शक्तियों पर ही आधारित होनी चाहिए।

आन्तरिक शक्तियों को आध्यात्मिक न मानकर प्राकृतिक मानते हैं इन प्राकृतिक शक्तियों का विकास बालक उपयुक्त वातावरण मिलने पर ही कर पाता है बालक स्वयं मूल्यों के निर्माता होते हैं उन पर मूल्य थोपे नहीं जाते। इसलिए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी को केन्द्र बिन्दु बनाया है

✗ प्रयोजनवाद तथा अनुशासन :→ सामाजिक प्रकृति के अनुशासन की सिफारिश करते हैं यह अनुशासन स्कूल की स्वतन्त्रता, उद्देश्यपूर्ण तथा सहयोगी क्रियाओं द्वारा स्थापित है। अनुशासन एक सामाजिक सन्तुलन है इस सन्तुलन को स्थिर रखने के लिए समाजीकृत क्रियाएं आवश्यक है

Scanned with CamScanner

अनुशासन में स्वतन्त्रता एक महान तत्व है यह अनुशासन किसी बाह्य शक्ति का परिणाम नहीं होना चाहिए बल्कि उसके पीछे सामाजिक चेतना, स्वतन्त्रता तथा प्रसन्नता होनी चाहिए

* **प्रयोजनवाद तथा शिक्षण विधियाँ :-** प्रयोजनवाद के अनुसार वह विधि अधिक प्रभावशाली है जो कि बच्चे की रुचियों पर आधारित हो जो समस्याओं के समाधान करने के योग्य हो। शिक्षण विधियों में प्रयोजनवाद ने बच्चे पर बल दिया है न कि पुस्तकों, अध्यापकों तथा विषय पर

सीखने का उद्देश्यपूर्ण क्रिया का सिद्धान्त

↓

क्रिया करके तथा अनुभव करके सीखने

↓

एकीकरण का सिद्धान्त

* **प्रयोजनवाद तथा पाठ्यक्रम :→** प्रयोजनवादी एक ऐसे पाठ्यक्रम के पक्ष में हैं जो विद्यार्थी के सभी पक्षों के गुणों का विकास करे। उसके मूल्य निर्माण तथा सामाजिक कुशलता की प्राप्ति हो और व्यक्तित्व का विकास हो। उचित समायोजन करने की शक्ति प्रदान करे तथा जीवन की समस्याओं के समाधान के योग्य बनाए। पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय कई नियमों को अपनाए

उपयोगिता का सिद्धान्त

↓

प्राकृतिक रुचियों का सिद्धान्त

↓

अनुभव का सिद्धान्त

↓

एकीकरण

Scanned with CamScanner

(3)

Page No.:
Date:

प्रयोजनवाद तथा मनोविज्ञान :- प्रयोजनवाद प्रक्रियाशील मनोविज्ञान से अधिक प्रभावित हुए। ये बुद्धि की अपेक्षा भावनाओं को अधिक महत्व देते हैं मनोविज्ञान मन के केन्द्रीय तत्व की उपेक्षा करता है वास्तव में जगत के कार्यो तथा विचारों के पीछे मन की एक ऐसी प्रेरक शक्ति होती है जो समस्त क्रियाओं में एकता स्थापित करती है।

प्रयोजनवाद तथा अध्यापक :→ प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षक का स्थान एक मित्र, पथप्रदर्शक तथा सलाहकार के रूप में उसे बालक के सामने सामाजिक परिस्थितियाँ प्रस्तुत करती हैं अध्यापक ज्ञान का भण्डार होना चाहिए उसे बुद्धिमान, कुशल तथा क्रियात्मक होना चाहिए जिनमें वे अपनी रुचि व योग्यता के अनुसार समस्याओं को सुलझा सके।

निष्कर्ष :→ इस प्रकार से हम देखते हैं कि प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद वह दार्शनिक विचारधारा है जो ज्ञानार्जन के लिये क्रिया, परीक्षण तथा व्यवहार को अपना आधार बनाती है और क्रिया से उत्पन्न होने वाले परिणाम पर जोर देती है प्रयोजनवाद के इस दर्शन में क्रिया प्रयोग, अनुभव उपयोगिता तथा व्यक्ति के सामाजिक विकास पर बल देकर वर्तमान शिक्षा को एक नये मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है यह विचारधारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध एक ऐसी क्रांति है, जो बदलते हुए समाज की आवश्यकता के अनुसार बालक को विकसित करना चाहती है।

Scanned with CamScanner